शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण
सत्र 7: आज्ञाकारिता (4क)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **यूहन्ना 14:15**
15 यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* ***- जॉन 14***

चरण 4*:* व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. आपको क्या लगता है कि लेखक ने आज्ञाकारिता को एक शिष्य के चार विशिष्टताओं में से पहले के रूप में क्यों चुना?

दो. यीशु का अनुसरण करने के लिए कहे जाने पर चेलों के रूप में तुरंत कार्रवाई करना क्यों महत्वपूर्ण है?

तीन. डर की प्रेरणा और प्यार की प्रेरणा के बीच के अंतर के बारे में सोचें। क्या आप डर से अधिक प्रेरित हैं या प्यार से?

चार. क्या परमेश्वर के वचन के बारे में आपका अध्ययन परमेश्वर की इच्छा या अपेक्षाओं को स्पष्ट करने में मदद करता है?

पाँच. क्या आपको अपने द्वारा लिए गए प्रमुख निर्णयों के लिए कुछ मार्गदर्शक सिद्धांत मिले हैं?

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 4 ए लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

आज्ञाकारिता एक शिष्य की पहली विशिष्टता है। हम परमेश् वर की आज्ञा का पालन करते हैं क्योंकि वह ब्रह्मांड का सर्वोच्च प्रभु है और हमारी आज्ञाकारिता उसकी अकथनीय दयालुता के लिए एकमात्र स्वीकार्य प्रतिक्रिया है (रोमियों 2:4)।

यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखोगे, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)। केवल वे जो परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं, उसके लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हैं। मसीह के लिए आपके प्रेम ने आपको पश्चाताप करने और उसका अनुसरण करने की उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए प्रेरित किया। आपका बपतिस्मा, जिसने ग्राफिक रूप से आपकी आत्म-मृत्यु और आपके जीवन के प्रभु के रूप में मसीह के सिंहासन की पुष्टि की, आज्ञाकारिता का एक और कदम था (रोमियों 6:3,4)। और ईसाई जीवन आज्ञाकारिता की एक सतत तीर्थयात्रा है।

कई साल पहले, मैंने एक सैन्य अड्डे का दौरा किया था। मैं उस आज्ञाकारिता से प्रभावित था जो सूचीबद्ध लोगों ने अपने सार्जेंट के प्रति प्रदर्शित की थी। जब उसने उन्हें दौड़ने के लिए कहा, तो वे भाग गए। जब उसने उन्हें शौचालय साफ करने के लिए कहा, तो उन्होंने रगड़ दिया। कोई बहस नहीं थी, कोई झिझक नहीं थी - केवल तत्काल कार्रवाई।

सूचीबद्ध लोगों ने अपने सार्जेंट की बात मानी क्योंकि वह लेफ्टिनेंट की बात मानता था, जिसने कमांड की श्रृंखला के माध्यम से जनरल की आज्ञा का पालन किया था। यदि सूचीबद्ध लोगों ने सार्जेंट की आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया होता, तो वे जनरल के अधिकार की अवहेलना करते और गंभीर परिणामों के अधीन होते। उनकी निरंतर भलाई उनकी आज्ञाकारिता पर निर्भर करती थी।

मुझे एहसास हुआ कि सेना में आज्ञाकारिता की प्रेरणा अक्सर डर होती है, जबकि ईसाई की प्रेरणा प्रेम होती है। फिर भी, सैन्य उदाहरण विश्वासियों के लिए एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को दर्शाता है: हमारा कल्याण हमारी आज्ञाकारिता का प्रत्यक्ष परिणाम है।

हम पवित्रशास्त्र के अपने ज्ञान और अपनी समर्पित इच्छा के माध्यम से लगातार परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए सशक्त हैं।

आपको परमेश्वर के वचन को जानना चाहिए

"धन्य हैं ... वे जो परमेश्वर के वचन को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं" (लूका 11:28)। यह विश्वास करना दुस्साहस है कि आप संभवतः परमेश्वर की इच्छा को जाने बिना उसकी आज्ञा का पालन कर सकते हैं।

एक बच्चे को वह न करने के लिए दंडित करना अनुचित है जो आप चाहते हैं यदि आप उसे कभी नहीं बताते हैं कि आप क्या उम्मीद करते हैं। हालाँकि, परमेश्वर अनुचित नहीं है। उसने अपने वचन के माध्यम से हमारे लिए अपनी इच्छा को स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। इसलिए, हमें बाइबल का अध्ययन करना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:15), यह समझते हुए कि यह हमें धार्मिकता में प्रशिक्षित करता है और हमें सिखाता है कि कैसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से जीना है (2 तीमुथियुस 3:16)।

बाइबल परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करती है। लेकिन, जैसा कि हम में से अधिकांश जानते हैं, बाइबल अध्ययन कठिन काम है। इसकी सच्चाई को जानने के लिए, हमें वचन का अध्ययन लगन से करना चाहिए, न कि केवल इत्मीनान से इसे ब्राउज़ करना चाहिए। कई ईसाई बाइबल की दृष्टि से अनपढ़ रहते हैं और खुद को आत्मिक पोषण, प्रेरणा और आशीष से वंचित करते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए बहुत आलसी हैं।

कुछ साल पहले, मुझे अधिक वजन और आकार से बाहर होने के लिए दोषी ठहराया गया था। इसलिए, मैंने भगवान और अपने परिवार के सामने एक प्रतिबद्धता बनाई कि मैं हर दिन दौड़ूंगा। मुझे पता था कि जॉगिंग से मेरे स्वास्थ्य में सुधार होगा। सबसे पहले। यह शुद्ध दुख था। शायद ही कभी ऐसा दिन था जब मैं दौड़ना चाहता था। मैं हमेशा अनगिनत कारणों के बारे में सोच सकता था कि मुझे उस ठंडी या गीली सुबह का सामना क्यों करना चाहिए - सिर्फ एक दिन के लिए। लेकिन इच्छाशक्ति से, मैंने खुद को इस प्रतिबद्धता को बनाए रखने के लिए मजबूर किया।

फिर मैंने अपना वजन कम करना और बेहतर महसूस करना शुरू कर दिया। और दौड़ना आसान हो गया। आखिरकार, मैंने पैंतालीस पाउंड खो दिए! मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं अभी भी दौड़ने से लड़ता हूं; मेरी भावनाएं अभी भी तर्कसंगत हैं कि मैं इसे कल तक के लिए टाल सकता हूं। लेकिन मैं बेहतर जानता हूं, और आज तक मैं जॉगिंग करना जारी रखता हूं।

मैंने परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और चलाने के बीच कई समानताएं पाई हैं। प्रत्येक गतिविधि का सबसे कठिन हिस्सा शुरू करना है। लेकिन एक बार जब मैं शुरू करता हूं, तो मैं वास्तव में दोनों का आनंद लेता हूं। और जब मैं इसके माध्यम से होता हूं, तो मुझे खुशी होती है कि मैंने उन्हें किया है। मैं प्रयास के लिए बेहतर हूं। प्रत्येक अनुशासन में मेरी भावनाएं कई कारण प्रदान करती हैं कि क्यों मैं "वैध रूप से" इसे सिर्फ एक दिन बंद कर सकता हूं। हालांकि, अगर मैं एक दिन चूक जाता हूं, तो अगले दिन अपने विलंब को सही ठहराना आसान हो जाता है। जब मैं उन्हें नियमित रूप से करता हूं, तो मेरी ताकत बढ़ती है और वे कम कठिन हो जाते हैं। शिष्य परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने की इच्छा रखता है।

यीशु ने कहा, "... यदि तुम मेरे वचन में बने रहो [अर्थात, प्रतिदिन चलते रहो], तो तुम वास्तव में मेरे चेले हो" (यूहन्ना 8:31)। शिष्य के जीवन में परमेश्वर के वचन का उपभोग करना प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि "परमेश्वर का जन सब एक भले काम के लिए पर्याप्त हो, और सुसज्जित हो" (2 तीमुथियुस 3:17)। आपको हमेशा "हर उस व्यक्ति का बचाव करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो आपसे उस आशा का हिसाब देने के लिए कहता है जो आप में है..." (1 पतरस 3:15)।

बाइबल के पात्रों के अनुभवों को आपके निर्देश के लिए उदाहरण के रूप में दर्ज किया गया है (1 कुरिन्थियों 10:11)। आपको लगातार पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों की खोज करनी चाहिए और उन्हें अपने जीवन में लागू करना चाहिए (भजन संहिता 119:7,8)।

मुझे विश्वास है कि मुझे हर निर्णय लेने की आवश्यकता के लिए परमेश्वर के वचन में एक मार्गदर्शक सिद्धांत या एक सीधा आदेश है। इसलिए यदि मैं किसी विशेष स्थिति में परमेश्वर की इच्छा को नहीं जानता हूं, तो इसकी संभावना अधिक है क्योंकि मैं परमेश्वर के वचन को नहीं जानता हूं।

जब कोई एक महत्वपूर्ण निर्णय के बारे में मेरी सलाह लेता है, तो मेरा पहला प्रश्न होता है: "क्या आपने वचन का अध्ययन किया है? क्या आपने स्वयं परमेश्वर की बात सुनी है?" मैं उन लोगों से चकित हूं जो परमेश्वर की खोज करने से पहले मेरी सलाह मांगते हैं। हमें धर्मी लोगों की सलाह की आवश्यकता है जो हमें और बाइबल दोनों को अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन यह लागू बाइबिल सिद्धांतों और प्रार्थना के हमारे अध्ययन का पालन करना चाहिए।

पीपी। 39-41

स्रोत: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

***चरण 6**: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

संशोधित 20261011